सिंदबाद की यात्राएँ

वैल बिरो

सिंदबाद की यात्राएँ

वैल बिरो

बहुत समय पहले, बगदाद शहर में, हिंदबाद नाम का एक गरीब आदमी रहता था, जो पेशे से कुली था. दिन गर्म था और उसका बोझ भारी था, इसलिए वह थोड़ी देर आराम करने के लिए बैठ गया.

जल्द ही उसे अपने सामने वाले भव्य घर से आते संगीत और खाने की स्वादिष्ट खुशबू का एहसास हुआ. हिंदबाद ईर्ष्या से भर गया. "हे भगवान," वह ज़ोर से चिल्लाया, "इस घर के मालिक ने ऐसा क्या किया है कि उसे इतनी दौलत मिली है?"

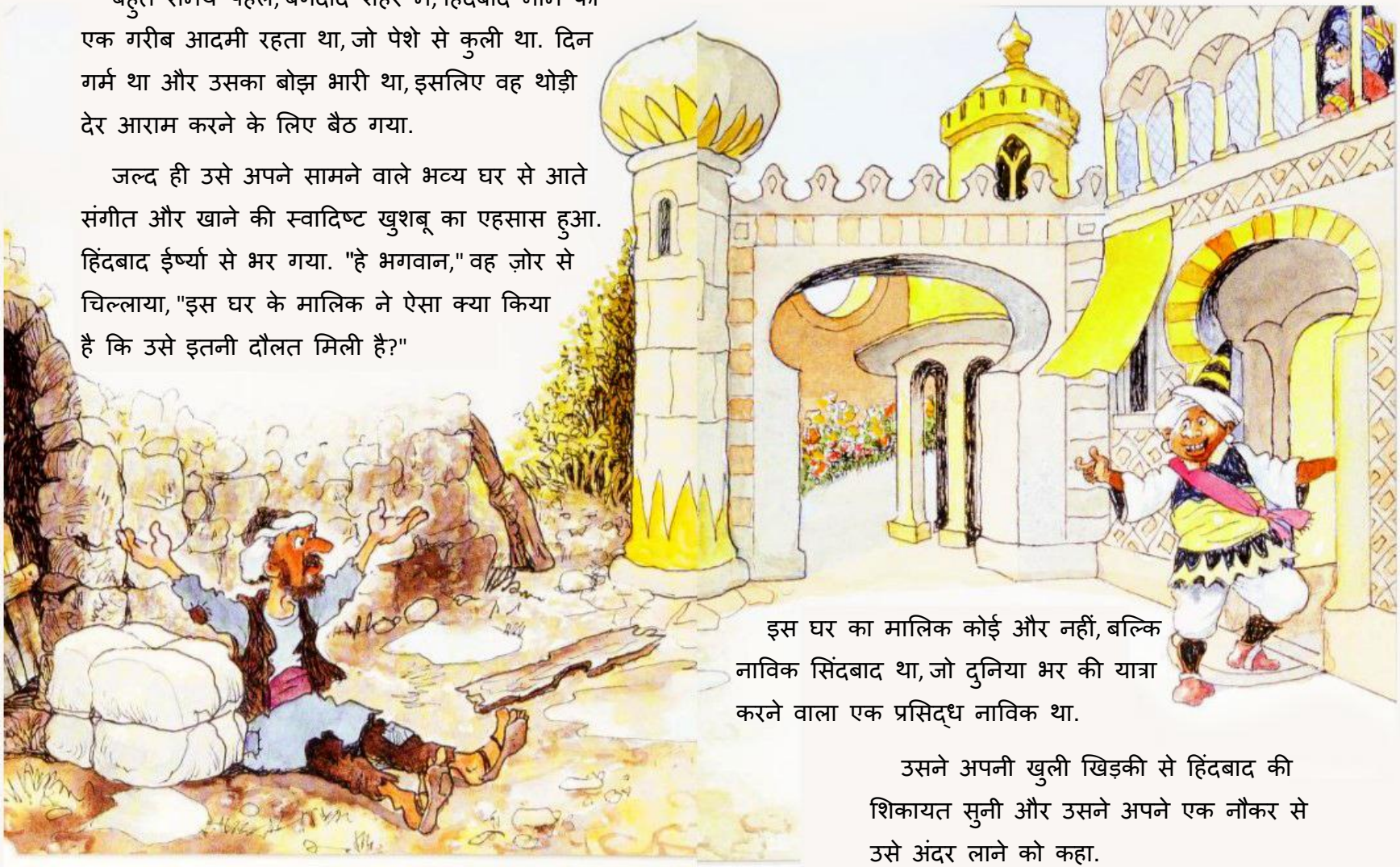

इस घर का मालिक कोई और नहीं, बल्कि नाविक सिंदबाद था, जो दुनिया भर की यात्रा करने वाला एक प्रसिद्ध नाविक था.

उसने अपनी खुली खिड़की से हिंदबाद की शिकायत सुनी और उसने अपने एक नौकर से उसे अंदर लाने को कहा.

हिंदबाद एक भव्य हॉल में दाखिल हुआ जहाँ सिंदबाद मेहमानों का स्वागत कर रहा था. "अंदर आओ, मेरे दोस्त. मेरे पास बैठो और कुछ खा लो."

भोजन के बाद, सिंदबाद ने कहा, "जहाँ तक तुम्हारे सवाल का जवाब है, मैं तुम्हें और अपने मित्रों को अपनी यात्राओं की कहानी सुनाता हूँ, और फिर तुम ही तय करना कि मैं कितना योग्य हूँ."

पहली यात्रा

सिंदबाद ने शुरू किया: तब मैं एक युवक था, जब मैं पहली बार अन्य व्यापारियों के साथ पूर्वी महासागर के द्वीपों के बीच व्यापार करने निकला था. एक दिन, कुछ हफ़्तों तक खराब मौसम के बाद, हमें एक छोटा सा द्वीप दिखाई दिया, जिसके बारे में हमने सोचा कि यह हमें थोड़ी राहत के लिए सूखी ज़मीन पर भोजन करने का मौका देगा.

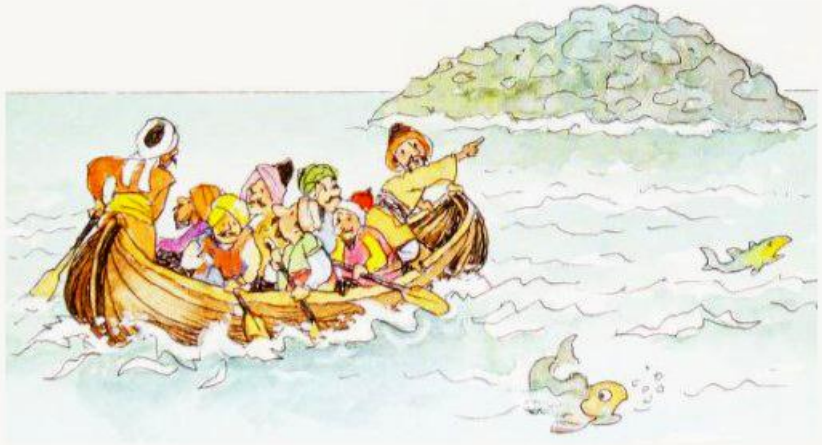

इसलिए हम नाव चलाकर उस पार गए और अपना भोजन तैयार करने के लिए हरे टीले पर चढ़ गए. जैसे ही हमने आग जलाई, टीला - हमारे लिए बहुत ही भयानक साबित हुआ - वो हमारे नीचे हिलने और काँपने लगा!

यह कोई द्वीप नहीं था, बल्कि एक भयानक समुद्री राक्षस की पीठ थी! मेरे दोस्त डर के मारे उछल पड़े, बेतहाशा नाव की ओर वापस दौड़े और पूरी तेज़ी से वहां से रवाना हो गए.

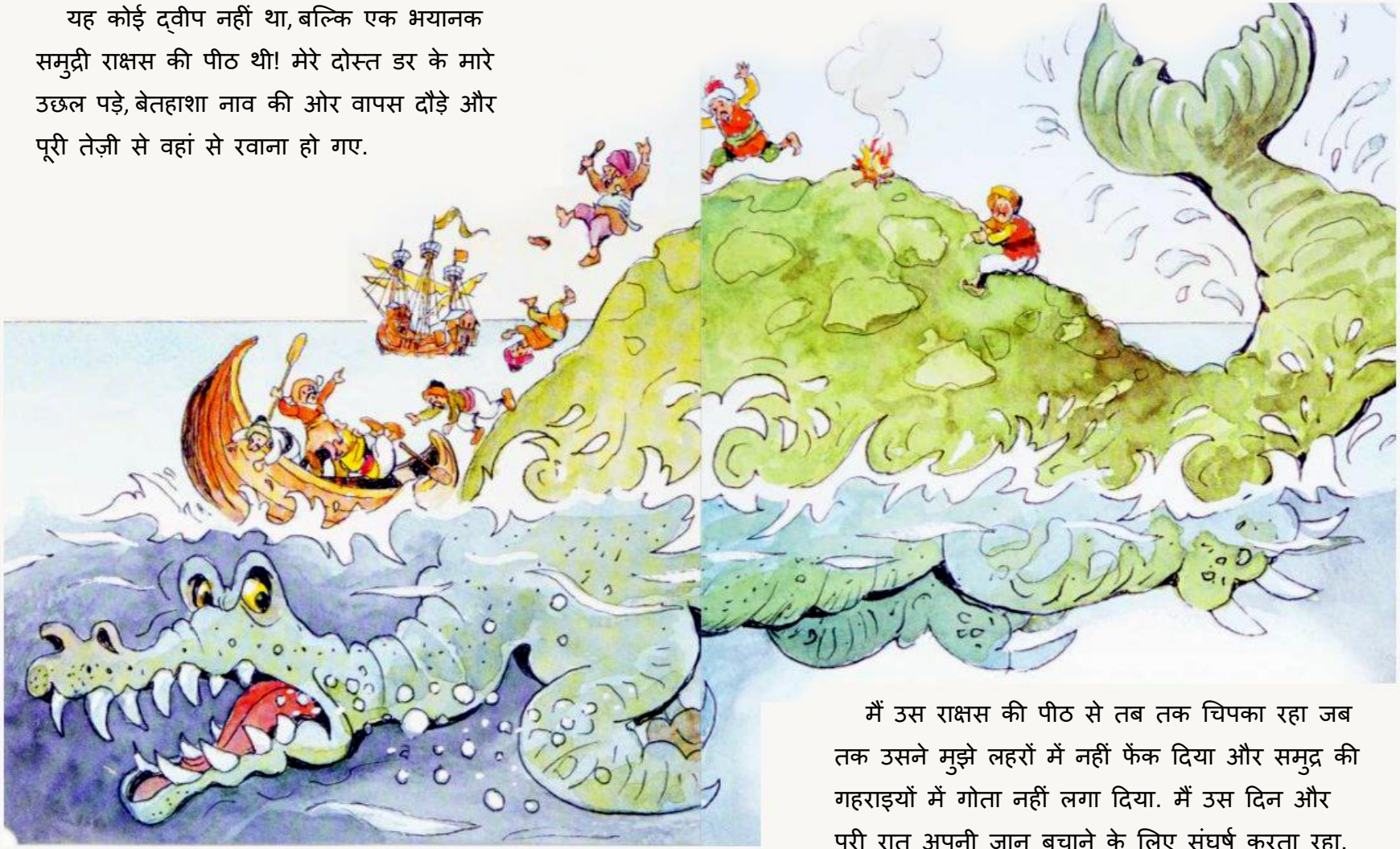

मैं उस राक्षस की पीठ से तब तक चिपका रहा जब तक उसने मुझे लहरों में नहीं फेंक दिया और समुद्र की गहराइयों में गोता नहीं लगा दिया. मैं उस दिन और पूरी रात अपनी जान बचाने के लिए संघर्ष करता रहा.

सिंदबाद ने आगे कहा: "मैं किसी तरह एक लकड़ी के टुकड़े से चिपका रहा, जिसने मुझे डूबने से बचाया, लेकिन अगली सुबह तक मैं पूरी तरह थक चुका था. हालाँकि, एक बड़ी लहर ने मुझे एक द्वीप पर फेंक दिया, जिससे मेरी जान बच गई. इस बार वो एक असली द्वीप था, और वहाँ मुझे, भगवान का शुक्र है, कुछ खाना और पानी मिला.

थोड़ा बेहतर महसूस करते हुए, मैंने चारों ओर देखा. मुझे लगा कि वह जगह सुनसान थी - फिर मैंने एक आदमी को कुछ घोड़ों को आगे बढ़ाते हुए देखा. उसने मुझे बताया कि वह द्वीप के शासक का सईस था. "आओ," उसने कहा, "हम महल तक चलें."

मैं उसकी मित्रता और अपनी भयानक परीक्षा के बाद अच्छा अवसर पाकर बहुत खुश हुआ.

अपने विशाल महल में, महाराजा ने मेरा गर्मजोशी से स्वागत किया. मैंने उन्हें समुद्री राक्षस की अपनी कहानी सुनाई और बताया कि कैसे मेरा सारा माल लेकर जहाज़ रवाना होने पर मैंने अपनी दौलत गँवा दी थी. "कोई बात नहीं," उन्होंने कहा, "हम तुम्हारा ध्यान रखेंगे और तुम जब तक चाहो हमारे साथ रह सकते हो."

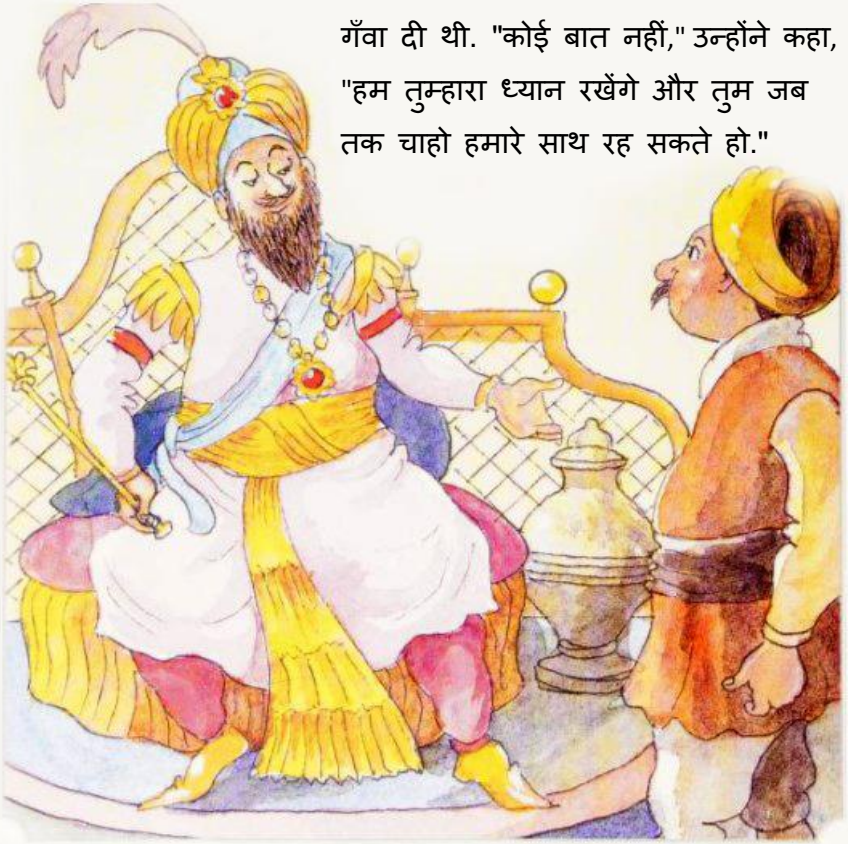

इस तरह मैंने द्वीप पर कई महीने बिताए, वहाँ के स्वागतशील निवासियों की अच्छी संगति में.

शहर में एक बढ़िया बंदरगाह था, और मैंने दूर-दूर से आए नाविकों से बातचीत में काफ़ी समय बिताया. मैं घर से कोई खबर आने की उम्मीद कर रहा था, क्योंकि मुझे घर की याद आने लगी थी.

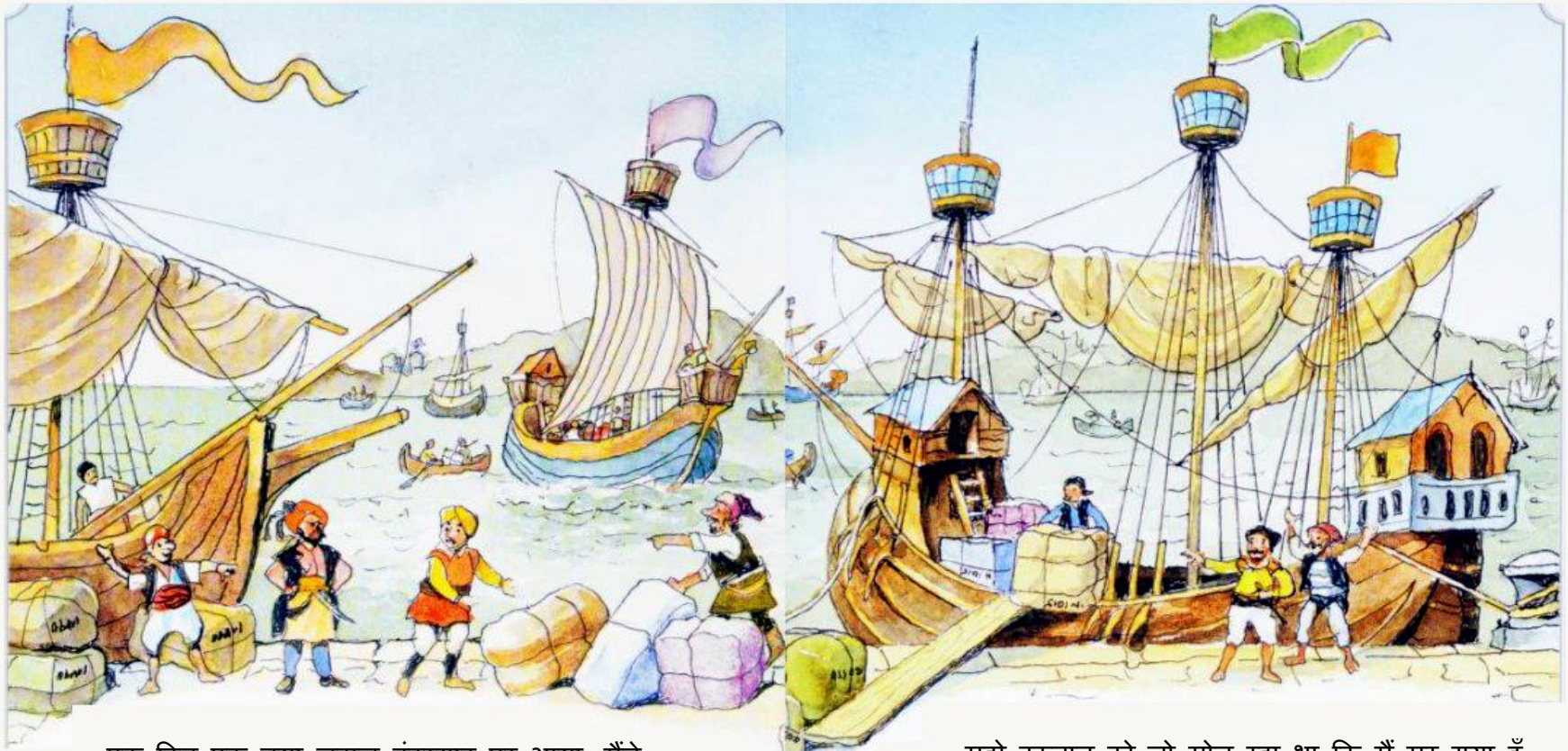

एक दिन, एक नया जहाज बंदरगाह पर आया. मैंने तुरंत पहचान गया कि यह वही जहाज था जिसने मुझे राक्षस की पीठ पर मेरे हाल पर छोड़ दिया था! जब उसका माल उतारा गया, तो उसमें मेरे अपने पार्सल भी थे, जिन पर मेरा नाम साफ़-साफ़ लिखा था!

मुझे कप्तान को, जो सोच रहा था कि मैं मर गया हूँ, यह यकीन दिलाने में थोड़ा वक़्त लगा कि मैं ही सिंदबाद हूँ. जब उसके नाविकों ने मुझे पहचान लिया और मेरे जीवित रहने पर खुश हुए, तभी उसने भी मेरी बात मान ली और मेरा सामान मुझे लौटा दिया.

अब मैं महाराजा की मुझ पर की गई सारी कृपा का बदला कुछ उपहारों से चुका सका. फिर मैं आखिरकार अपने घर की यात्रा पर निकल पड़ा.

हम कई बंदरगाहों पर रुके, जहाँ मैंने अपने सामान का इतना अच्छा व्यापार किया कि मैं घर लौटते समय काफी अमीर हो गया, जिससे मेरे परिवार को बहुत खुशी हुई.

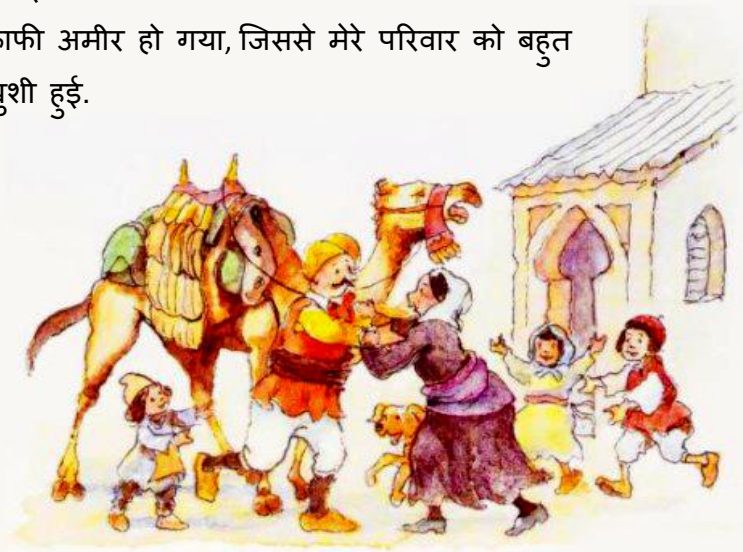

जब सिंदबाद ने अपनी कहानी पूरी की, तो उसने हिंदबाद को सोने का एक थैला दिया, और उसे और उसके अन्य दोस्तों को अगले दिन वापस आने के लिए आमंत्रित किया.

हिंदबाद इस अप्रत्याशित उपहार से बहुत खुश हुआ और अब वो अगली कहानी सुनने के लिए बेताब था.

दूसरी यात्रा

अगले दिन, एक और बढ़िया भोजन के बाद, सिंदबाद ने अपनी दूसरी साहसिक यात्रा का वर्णन करना शुरू किया: उसने कहा, हालाँकि मेरा इरादा घर पर ही रहने का था, फिर भी मैं बेचैन हो गया. इसलिए मैं फिर कुछ सामान लेकर अन्य व्यापारियों के साथ मिलकर समुद्र पार एक नई यात्रा पर निकल पड़ा.

एक दिन हमने एक खूबसूरत द्वीप के पास लंगर डाला, जिसकी खोज करने का हमने फैसला किया. हमने जहाज का लंगर डाला और किनारे पर पहुँच गए.

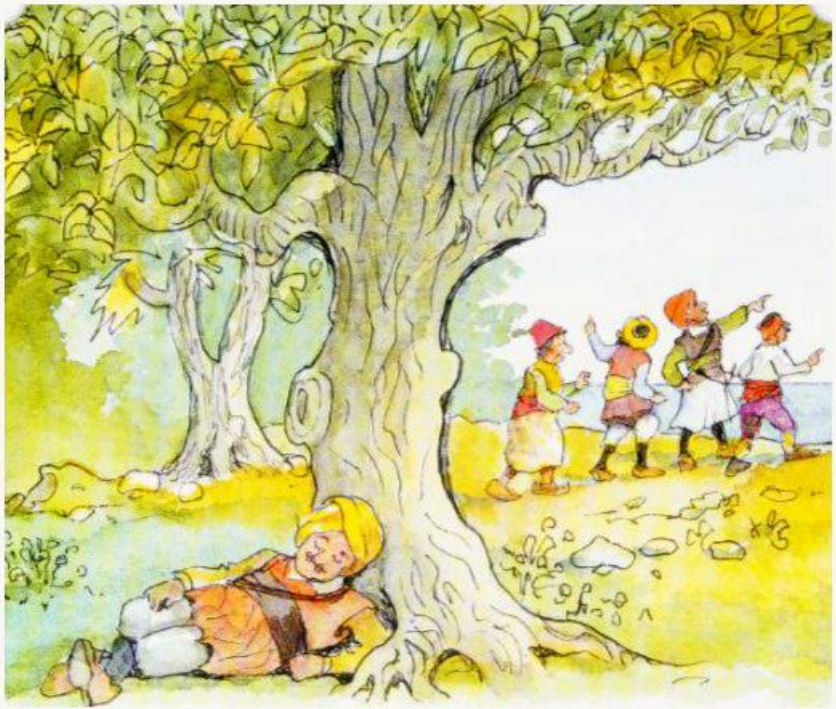

द्वीप पर उतरकर, मेरे साथी खोजबीन के लिए निकल पड़े, जबकि मैं अपने नए परिवेश का आनंद लेने के लिए एक पेड़ की छाया में बैठ गया - और जल्द ही गहरी नींद में सो गया. कुछ घंटों बाद जब मैं उठा, तो मुझे निराशा हुई कि बाकी लोग जहाज पर लौट आए थे और, क्या आप विश्वास करेंगे, वे दूर जा चुके थे! मैं फिर से फँस गया था.

मैं चारों ओर देखने के लिए पेड़ पर चढ़ गया. समुद्र की ओर, मैंने देखा कि हमारा जहाज क्षितिज के पार गायब हो रहा था, लेकिन अंदर की ओर देखने पर मुझे पेड़ों के बीच कुछ बड़ा और सफ़ेद दिखाई दे रहा था. मैं जाँच करने गया, और वहां मुझे एक विशाल अंडा दिखाई दिया, लगभग पंद्रह कदम की दूरी पर.

मैं इतने विशाल अंडे के स्रोत के बारे में उलझन में था, तभी एक काली परछाईं उस पर और मुझ पर भी छा गई. मैंने ऊपर देखा, तो देखा...

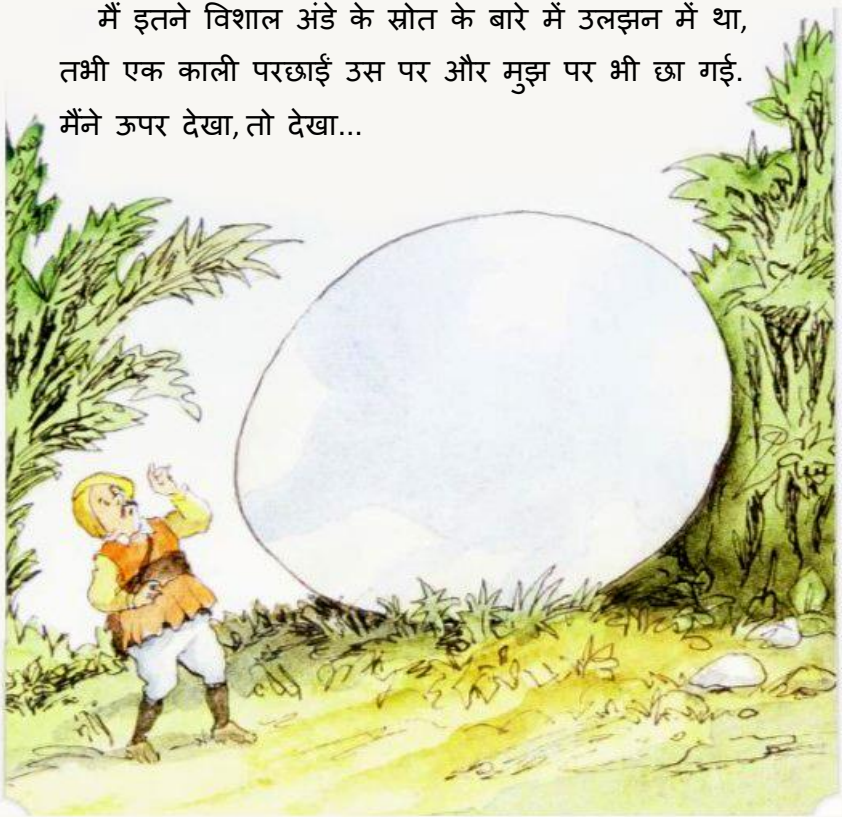

...एक विशालकाय पक्षी ऊपर मंडरा रहा था. यह वही पौराणिक पक्षी रहा होगा जिसके बारे में मैंने अक्सर नाविकों को डरते हुए बात करते सुना था.

तभी मुझे ख्याल आया कि क्या वो पक्षी द्वीप से बाहर निकलने का मेरा रास्ता हो सकता था? जैसे ही वह अंडे पर बैठने के लिए नीचे झपटा, मैंने अपनी पगड़ी खोली और खुद को उसके पैर से बाँध लिया. फिर मैं इंतज़ार करने लगा.

भोर होते ही, जैसी कि मैंने उम्मीद की थी, वो चील उड़ गई. मुझे अपने साथ ले गई. वो विशाल पक्षी इतनी तेज़ी से और इतनी ऊँचाई पर उड़ा कि मैं बेहोश हो गया, और जब हम एक गहरी घाटी में उतरे, तभी मुझे होश आया. मैंने फुर्ती से खुद को खोला, इससे पहले कि चील अपनी चोंच में एक विशाल साँप को पकड़कर उड़ जाती.

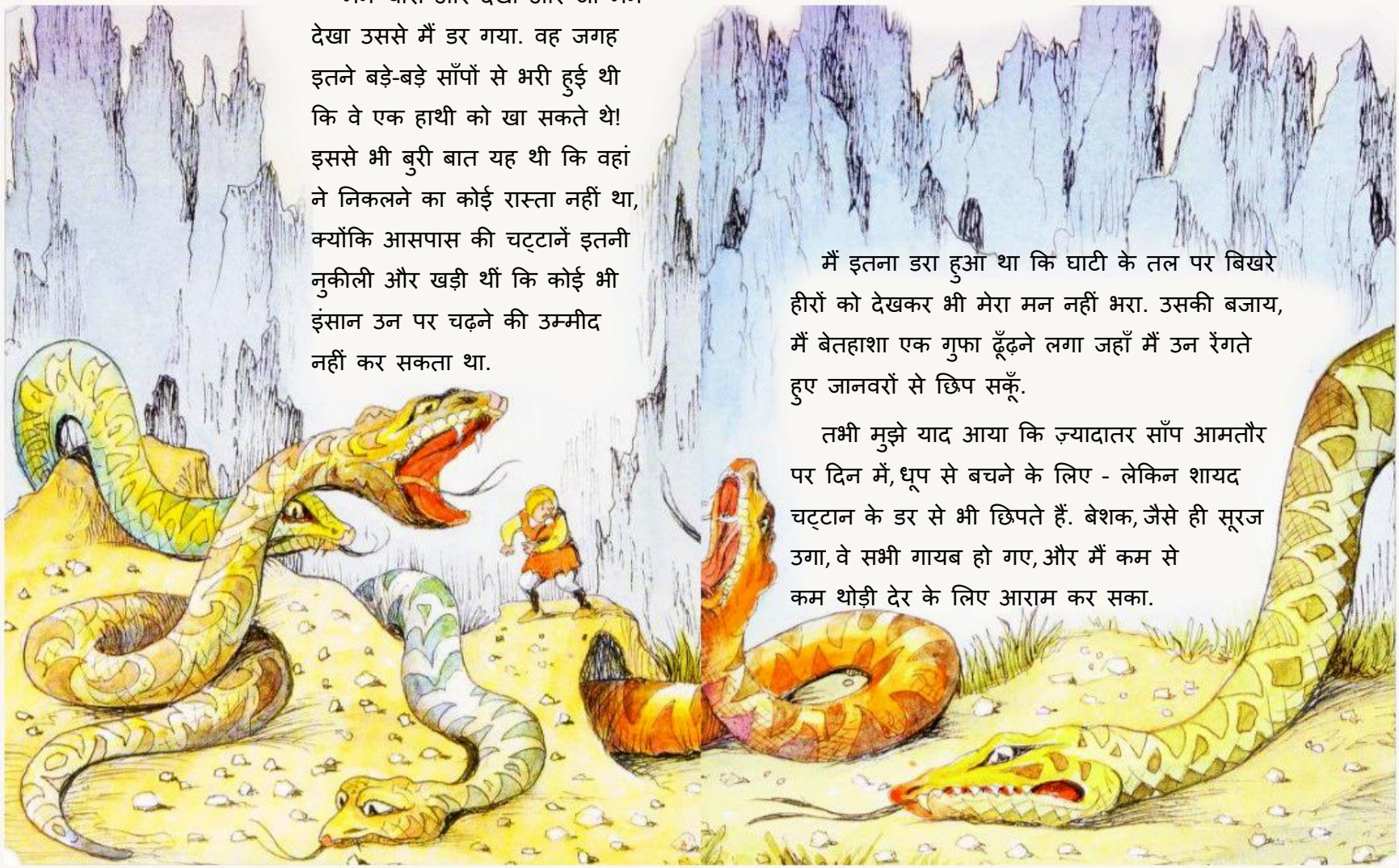

मैंने चारों ओर देखा और जो मैंने देखा उससे मैं डर गया. वह जगह इतने बड़े-बड़े साँपों से भरी हुई थी कि वे एक हाथी को खा सकते थे! इससे भी बुरी बात यह थी कि वहां ने निकलने का कोई रास्ता नहीं था, क्योंकि आसपास की चट्टानें इतनी नुकीली और खड़ी थीं कि कोई भी इंसान उन पर चढ़ने की उम्मीद नहीं कर सकता था.

मैं इतना डरा हुआ था कि घाटी के तल पर बिखरे हीरों को देखकर भी मेरा मन नहीं भरा. उसकी बजाय, मैं बेतहाशा एक गुफा ढूँढ़ने लगा जहाँ मैं उन रेंगते हुए जानवरों से छिप सकूँ.

तभी मुझे याद आया कि ज़्यादातर साँप आमतौर पर दिन में, धूप से बचने के लिए - लेकिन शायद चट्टान के डर से भी छिपते हैं. बेशक, जैसे ही सूरज उगा, वे सभी गायब हो गए, और मैं कम से कम थोड़ी देर के लिए आराम कर सका.

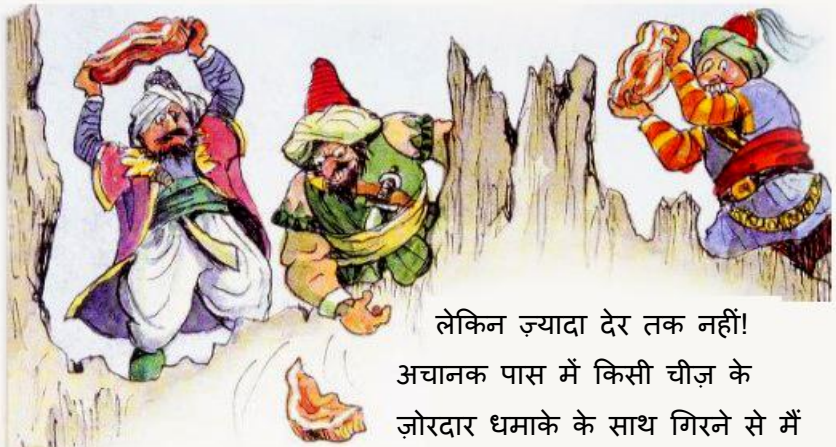

लेकिन ज़्यादा देर तक नहीं! अचानक पास में किसी चीज़ के ज़ोरदार धमाके के साथ गिरने से मैं चौंक गया: यह कच्चे मांस का एक बड़ा टुकड़ा था! जैसे-जैसे और भी टुकड़े गिरते गए, मैंने ऊपर देखा तो लोग चट्टानों पर इकट्ठा हो गए थे और उन्हें नीचे फेंक रहे थे. मांस के टुकड़े चारों ओर बिखरे हीरों पर गिर रहे थे.

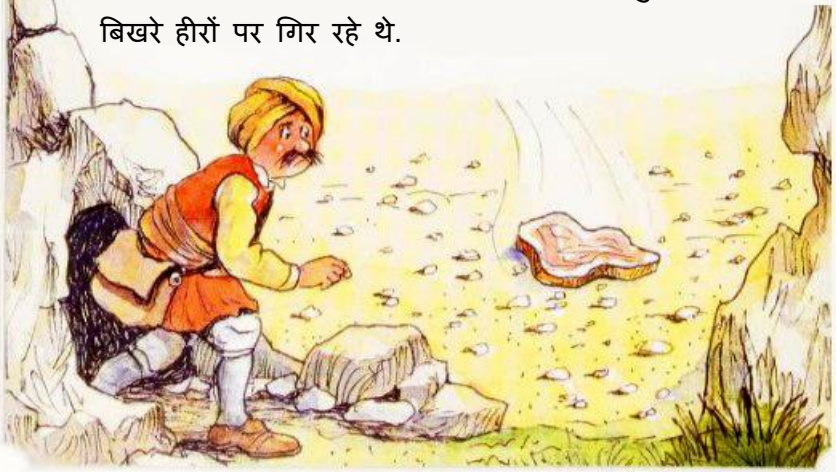

मुझे वे कहानियाँ याद आईं कि कैसे व्यापारी मांस फेंककर हीरे ढूँढ़ते थे, और जब वह उन हीरों पर भारी मांस का टुकड़ा पड़ता था, तो रत्न उसमें चिपक जाते थे. फिर चीलें झपट्टा मारकर मांस को अपने घोंसलों तक ले जाती थीं और अपने बच्चों को खिलाती थीं. फिर व्यापारी ऊँची आवाज़ों से चील को डराने के लिए घोंसलों की ओर दौड़ते थे, और हीरे अपने लिए इकट्ठा कर लेते थे.

मैं सोचने लगा कि क्या इस भयानक जगह से भागने का यही रास्ता हो सकता है. इसलिए मैंने अपने थैले में जितने हीरे हो सके, भर लिए और अपनी पगड़ी पहनकर, अपनी पीठ पर मांस का एक टुकड़ा बाँध लिया. फिर मैं मुँह के बल लेट गया और इंतज़ार करने लगा.

जल्द ही, चीलें आ पहुँचीं. वे विशालकाय जीव थे, और उनमें से सबसे बड़े चील ने मेरी पीठ पर बंधा मांस देखा, उसे उठा लिया - और मुझे भी - और चट्टान की चोटी पर उड़ गया.

व्यापारी चीलों को डराने के लिए दौड़े आए, और उन्होंने मुझे ज़मीन पर पाया, मेरे थैले में हीरों से भरा एक खजाना था.

मेरी कहानी सुनकर वे हैरान रह गए, लेकिन जब मैंने कहा कि मैं हीरे उनके साथ बाँटना चाहता हूँ, तो वे बहुत खुश हुए.

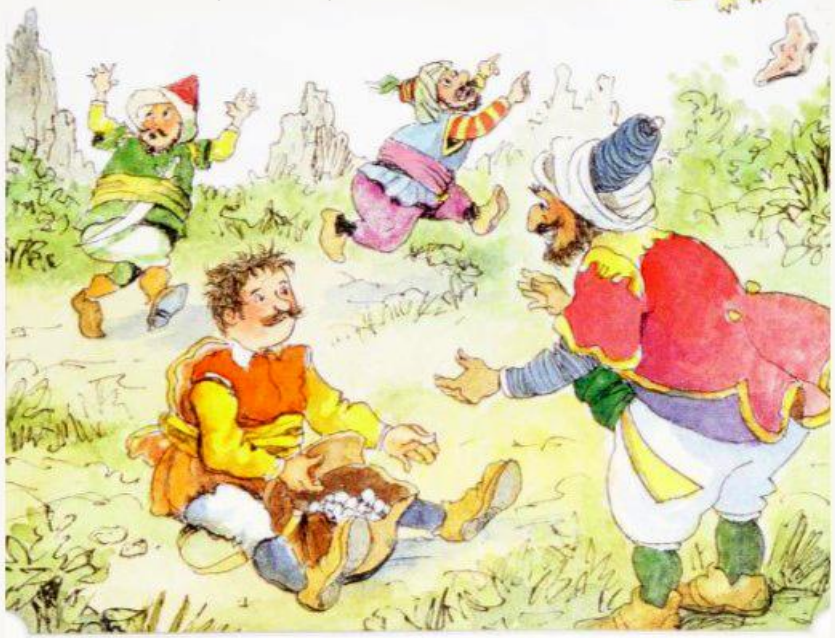

इस प्रकार, अंततः सिंदबाद ने रास्ते में विभिन्न द्वीपों पर अपने हीरे बेचकर अपने घर पहुँचने का किराया चुकाया. मेरे परिवार ने खुशी-खुशी मेरा स्वागत किया, और मेरे पड़ोसियों ने भी, जिनके साथ मैंने अपनी नई दौलत बाँटी.

हिंदबाद को सोने का एक और थैला मिला, और उसे अगली रात अगली उल्लेखनीय कहानी सुनने के लिए वापस आने का निमंत्रण भी मिला.

तीसरी यात्रा

अगली शाम खाने के बाद, सिंदबाद ने दुबारा शुरू किया:

घरेलू जीवन का सुख मुझे और रोमांच की चाहत से मुक्त नहीं कर पाया. इसलिए जल्द ही मैं व्यापारियों के एक दल के साथ द्वीपों के बीच एक और यात्रा पर निकल पड़ा.

अपनी यात्रा के पाँचवें दिन हमने भोजन के लिए एक द्वीप पर लंगर डाला. वहाँ हमें एक रॉक का अंडा मिला, जैसा कि मैंने पहले बताया था. वो रॉक का अंडा फूटने वाला ही था.

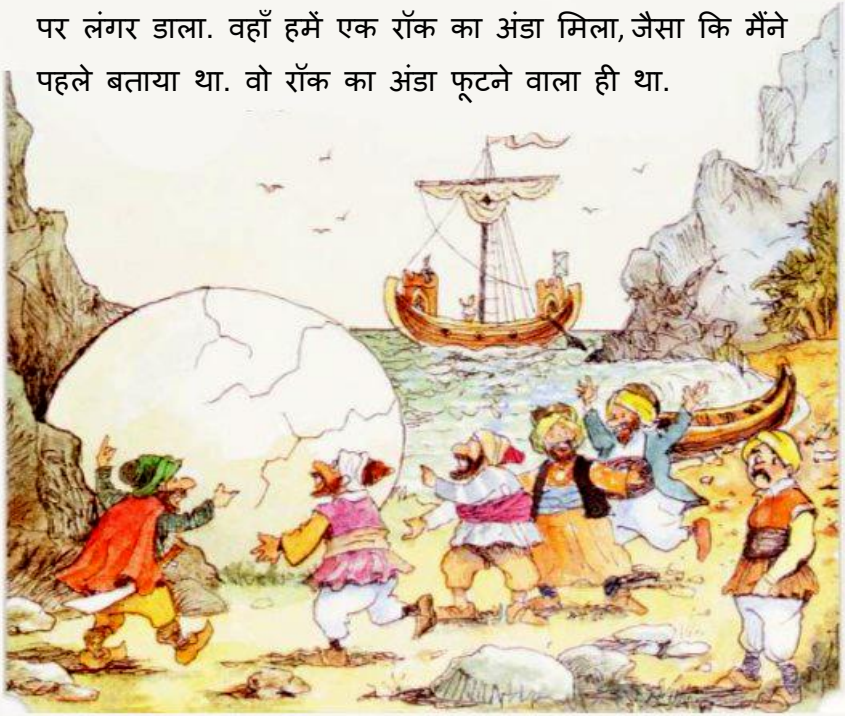

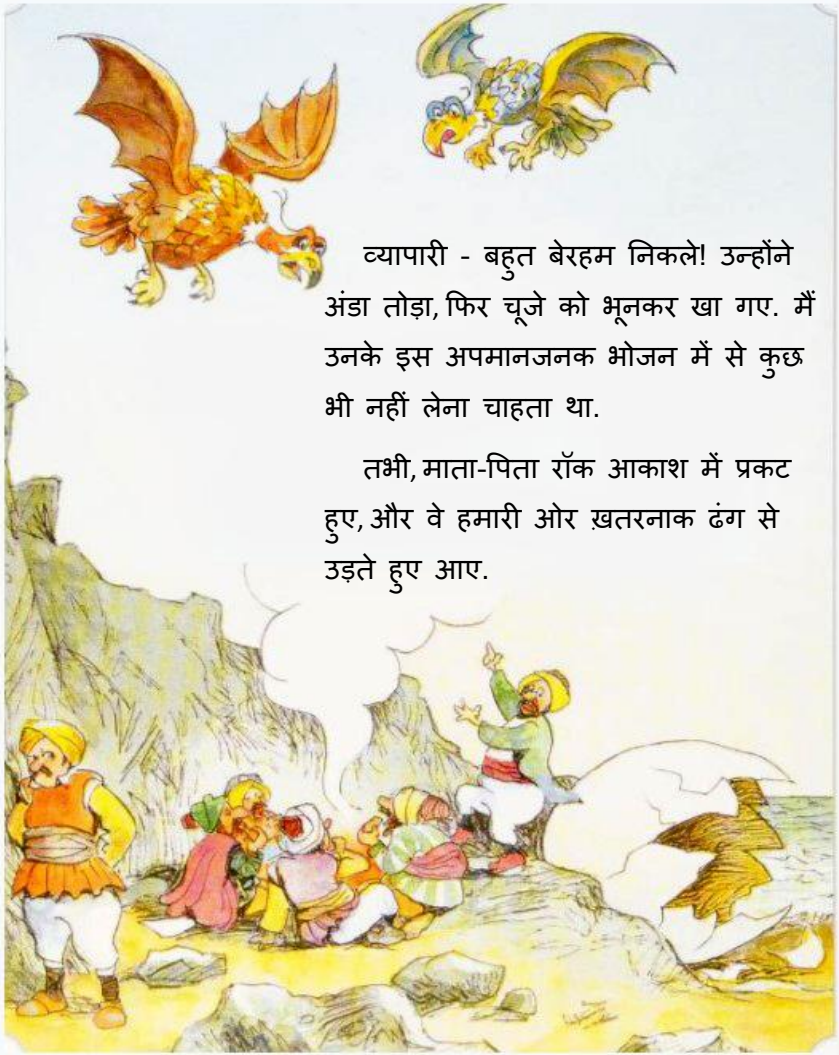

व्यापारी - बहुत बेरहम निकले! उन्होंने अंडा तोड़ा, फिर चूजे को भूनकर खा गए. मैं उनके इस अपमानजनक भोजन में से कुछ भी नहीं लेना चाहता था.

तभी, माता-पिता रॉक आकाश में प्रकट हुए, और वे हमारी ओर ख़तरनाक ढंग से उड़ते हुए आए.

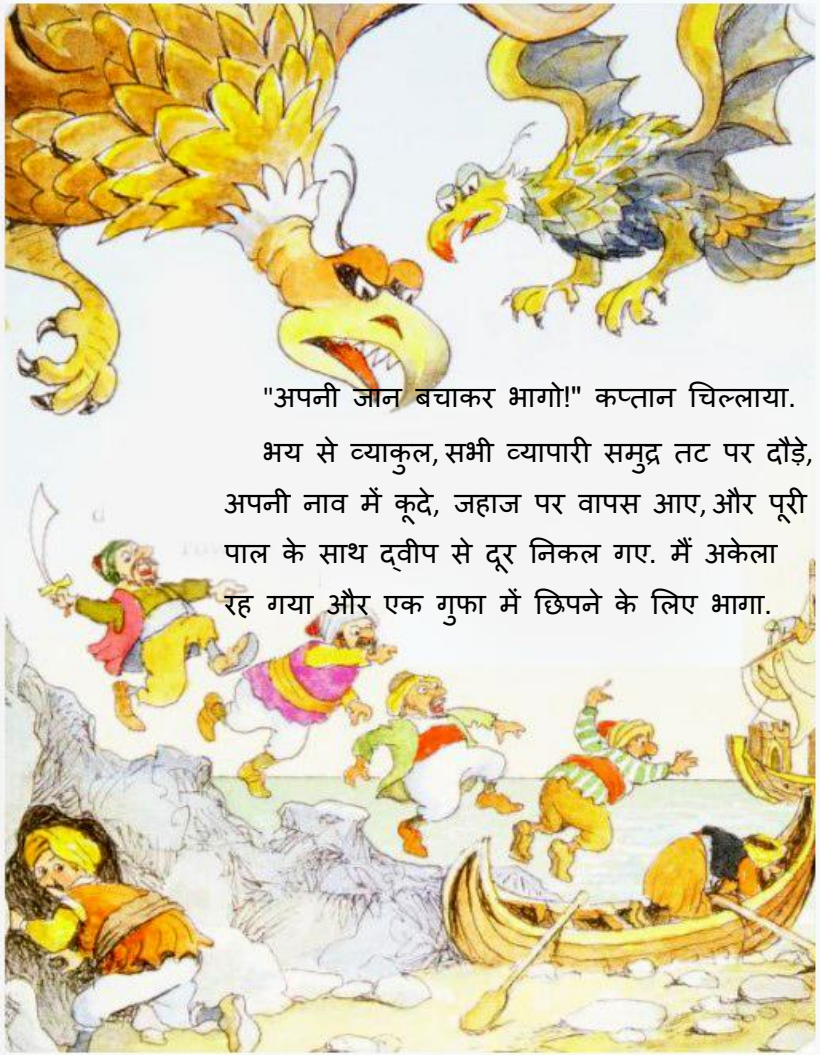

"अपनी जान बचाकर भागो!" कप्तान चिल्लाया.

भय से व्याकुल, सभी व्यापारी समुद्र तट पर दौड़े, अपनी नाव में कूदे, जहाज पर वापस आए, और पूरी पाल के साथ द्वीप से दूर निकल गए. मैं अकेला रह गया और एक गुफा में छिपने के लिए भागा.

विशाल रॉक्स, जो कुछ हुआ था उसे समझकर, नीचे उतरे और अपने टूटे हुए अंडे के पास उतरे. उनमें से प्रत्येक ने एक विशाल शिलाखंड पकड़ा और वे जहाज का पीछा करते हुए उड़े.

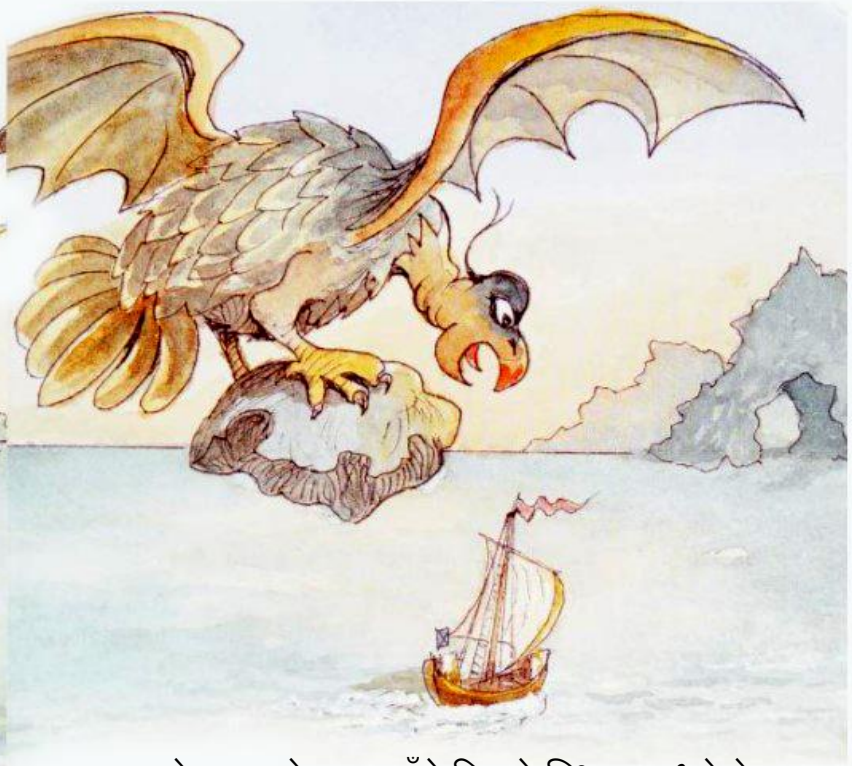

जब वे जहाज़ के पास पहुँचे, फिर वे निशाना साधने के लिए मँडराए. फिर उन्होंने नीचे गोता लगाया और प्रत्येक ने अपना शिलाखंड फेंक दिया. दोनों शिलाखंड जहाज से टकराए, जो चकनाचूर हो गया और बिना कोई निशानी छोड़े डूब गया, मेरे सभी साथियों और माल को अपने साथ लेकर.

सिंदबाद ने कहा, "मैं इस त्रासदी को देखकर स्तब्ध था, लेकिन यह महसूस करने से खुद को नहीं रोक सका कि रॉक्स के पास अपने चूज़े के खोने पर उनके गुस्से का कोई न कोई औचित्य ज़रूर था. उनके उड़ जाने के बाद, मैं सोचने लगा कि आगे मेरा क्या होगा. सौभाग्य से, मुझे भरपूर फल और ताज़ा पानी मिला, इसलिए मैं तब तक किसी तरह बच गया जब तक कि तीन दिन बाद, एक जहाज ने समुद्र तट के पास लंगर डाला."

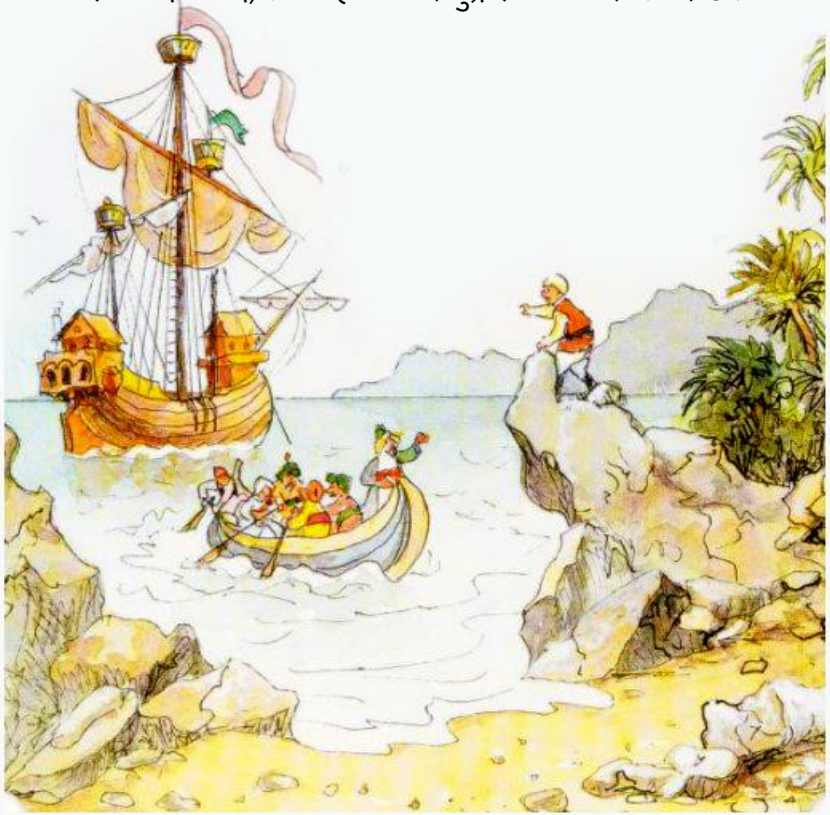

जहाज़ पर मौजूद व्यापारी मेरी कहानी सुनकर हैरान रह गए और मेरे साथियों के भाग्य और मेरे सारे माल के नष्ट हो जाने पर दुख व्यक्त किया.

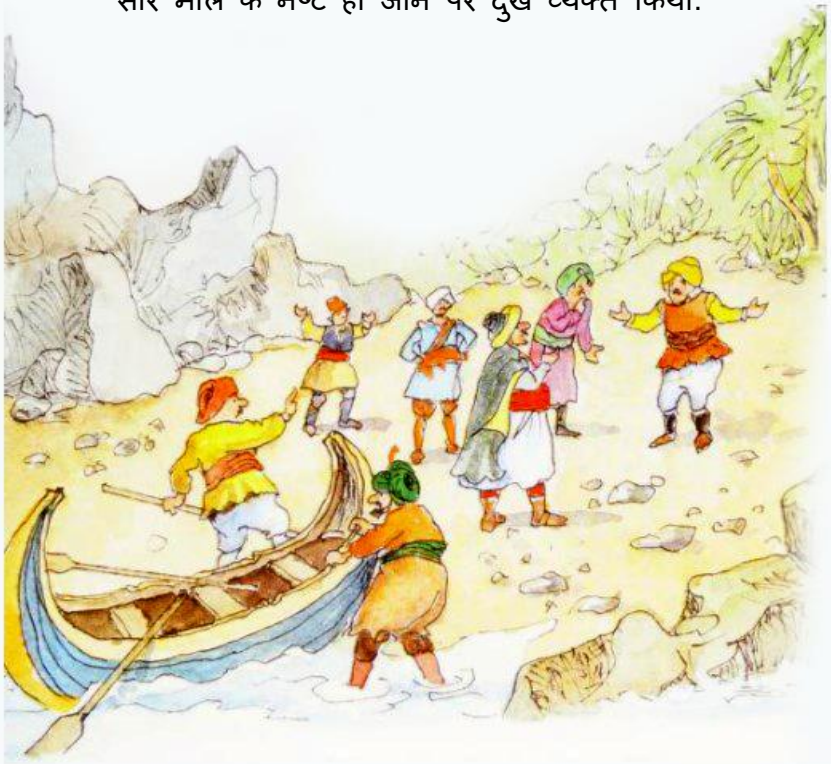

उन्होंने मुझे नारियलों की खोज में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया. "तुम्हें वो बहुत सार्थक लगेगा."

मैं ख़ुशी-ख़ुशी उनके साथ हो लिया और एक लंबी यात्रा के बाद हम नारियल के पेड़ों के एक जंगल में पहुँचे. पेड़ इतने ऊँचे थे कि हमारे लिए उन पर चढ़कर ऊपर लगे नारियलों तक पहुँचना नामुमकिन था. हालाँकि, पेड़ों की चोटियों पर बंदरों का एक झुंड बक-बक कर रहा था. हमारे समूह के एक सदस्य ने हमें अपने पैरों के आस-पास से कुछ कंकड़ उठाकर बंदरों पर फेंकने को कहा और देखा कि आगे क्या होता है...

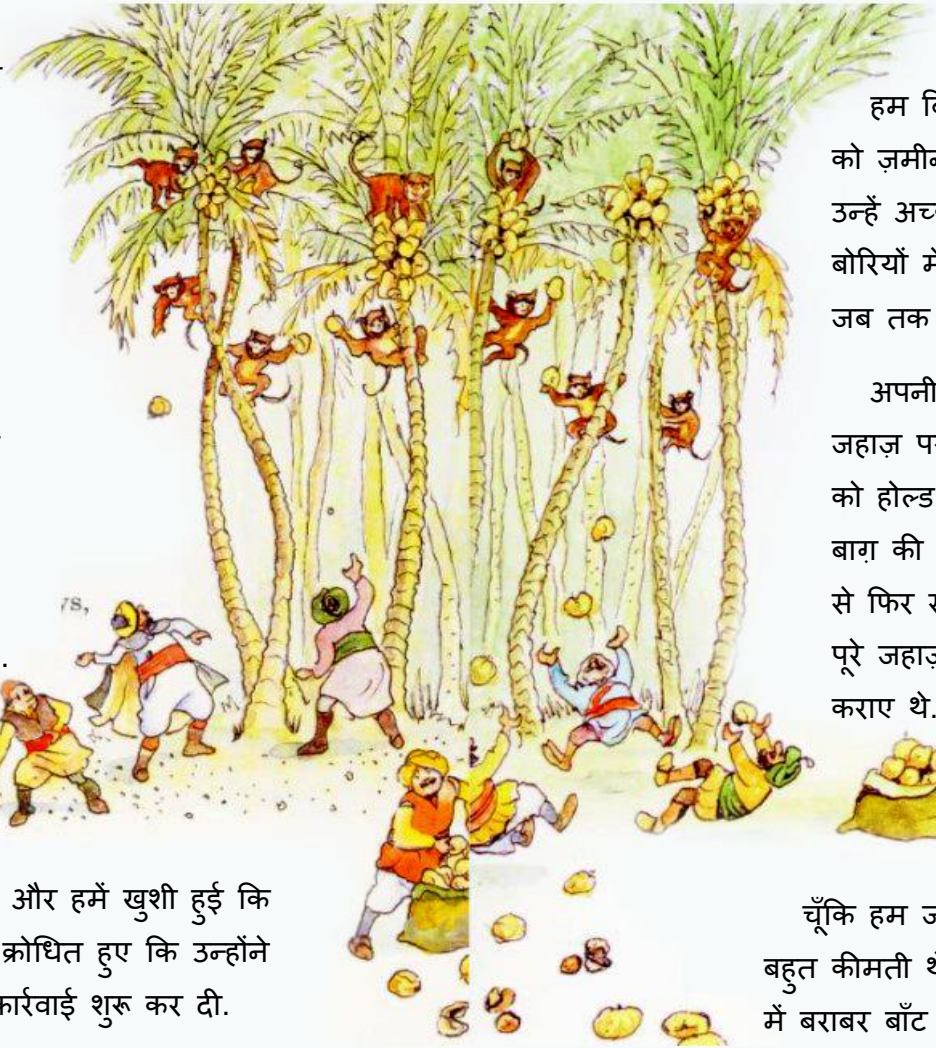

हमने जैसा कहा, वैसा ही किया और हमें खुशी हुई कि बंदर हमारी इस बमबारी से इतने क्रोधित हुए कि उन्होंने हम पर नारियल फेंककर जवाबी कार्रवाई शुरू कर दी.

हम बिल्कुल यही चाहते थे! हम नारियलों को ज़मीन पर गिरने और फूटने से पहले ही उन्हें अच्छी तरह पकड़ लेते और उन्हें अपनी बोरियों में तब तक सावधानी से रखते रहे जब तक कि हर बोरी भर न जाए.

अपनी सफलता से प्रसन्न होकर, हम जहाज़ पर लौट आए और अपनी सारी सामग्री को होल्ड में भर दिया. फिर हम नारियल के बाग़ की ओर चल पड़े और उन दयालु बंदरों से फिर से भिड़ गए, जिन्होंने जल्द ही हमारे पूरे जहाज़ को भरने लायक नारियल उपलब्ध कराए थे.

चूँकि हम जानते थे कि ये नारियल बहुत कीमती थे, इसलिए हमने उन्हें आपस में बराबर बाँट लिया.

इस भाग्यशाली घटना के बाद, हम कई द्वीपों की यात्रा करते रहे और वहाँ के निवासियों के साथ अपने नारियलों का व्यापार करते रहे, या उन्हें मसालों, मिर्चों या मोतियों के बदले में देते रहे. कई जगहों पर नारियल का दूध एक बहुत ही कीमती पेय था, और हमें उसकी अच्छी कीमत मिलती थी.

सिंदबाद के अनुसार, जब व्यापारियों ने सारे नारियल बेच दिए, तो फिर वे अलग-अलग हो गए. मैंने बदले में मिले सामान और मुनाफे में से अपना हिस्सा लिया और घर की ओर चल पड़ा. मैंने अपने मुनाफे का दसवाँ हिस्सा गरीबों में बाँट दिया और अपने परिवार के साथ घर पर आराम करने लगा.

पहले की तरह, हिंदबाद को सोने का एक और थैला दिया गया और दुबारा अगली रात वापस आने को कहा गया.

अंतिम यात्रा

अगली रात, खाने के बाद, सिंदबाद ने अपनी आखिरी साहसिक यात्रा की कहानी सुनानी शुरू की:

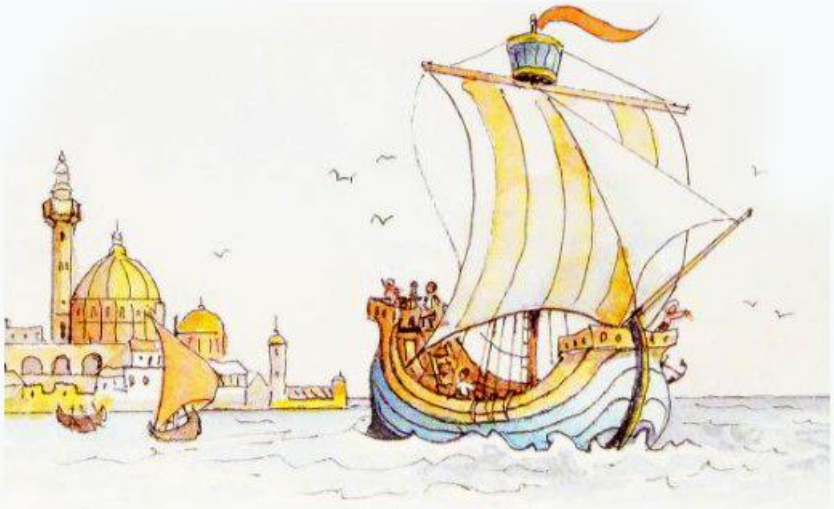

मैं अब बूढ़ा हो रहा था, उसने कहा, और मुझे लगा कि मेरे यात्रा के दिन खत्म हो गए हैं. लेकिन कुछ दोस्तों ने मुझे उनके साथ चलने के लिए मना लिया, और मैं खुद को रोक नहीं सका. इसलिए हमने बेचने के लिए अपने जहाज़ पर कीमती सामान लाद लिया और एक बार फिर, मैंने खुद को एक नई यात्रा पर निकलते हुए पाया.

अफसोस, यह यात्रा बहुत बुरी तरह शुरू हुई - क्योंकि जिस दिन हम बंदरगाह से निकले, उसी दिन समुद्री डाकुओं के एक गिरोह ने हम पर हमला कर दिया! जब वे तलवारें खींचकर जहाज़ पर चढ़े, तो हमें अपनी जान का डर सताने लगा. लेकिन जब हमने कोई प्रतिरोध नहीं किया, तो उन्होंने हमें छोड़ दिया और हमें ज़ंजीरों में जकड़ दिया.

वे हमारे जहाज़ को खींचकर एक दूर बंदरगाह ले गए और, जैसा कि उन दिनों होता था, उन्होंने हमें गुलामों जैसे बेच दिया.

मैं भाग्यशाली था कि मुझे एक दयालु स्वामी ने खरीदा, जिसने मेरे साथ अच्छा व्यवहार किया. उसने मुझे अच्छा खाना और रहने की जगह दी, और मुझे कोई शिकायत नहीं थी - सिवाय मेरी आज़ादी और जहाज़ में मौजूद मेरे सारे सामान के, जिसे समुद्री डाकू लूट ले गए थे.

एक दिन, मेरे स्वामी मुझे जंगल में ले गए और मुझे एक पेड़ पर चढ़ने का आदेश देते हुए कहा, "अब तुम हाथियों को गुज़रते हुए देखो और तब तक वहीं रहो. फिर अच्छे दाँतों वाले एक हाथी को चुनो और उसे मार डालो."

उसने मेरे लिए कुछ खाना छोड़ा और वो खुद शहर लौट गया. मैं हाथी जैसे नेक जीव को मारने से बहुत हिचकिचा रहा था, लेकिन मैं एक गुलाम था, और फिर आदेश तो आदेश ही होता है.

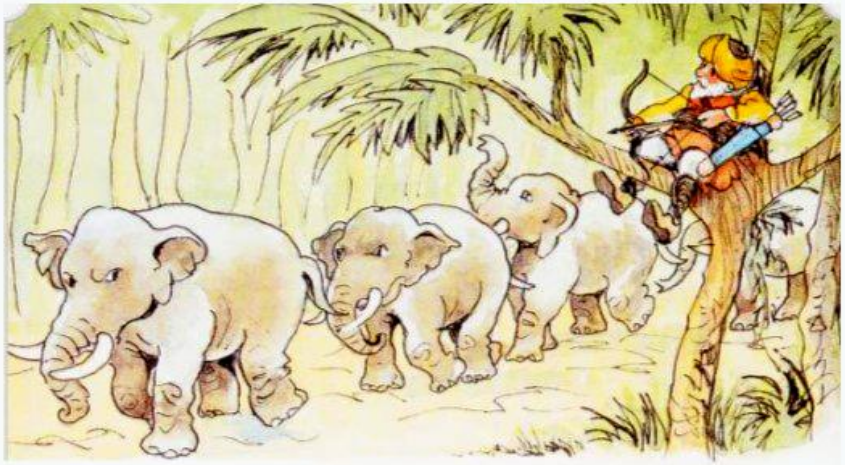

अगली सुबह - भारी मन से - मैंने अपने धनुष-बाण से एक हाथी को मार डाला.

मेरा स्वामी बहुत प्रसन्न हुआ. हम उस बेचारे हाथी को दफ़नाने गए, लेकिन उसके दाँत हमने रख लिए. तब मुझे एहसास हुआ कि मेरे मालिक ने मुझे सिर्फ़ कीमती हाथीदांत के लिए ही उस शानदार जानवर को मारने का आदेश दिया था.

अगले दिन, मेरे मालिक ने मुझे एक और हाथी पर गोली चलाने का आदेश दिया. लेकिन जब हाथी वहां पहुँचे, तो आगे बढ़ने के बजाय, वे रुक गए और मुझे घूरने लगे. मैं डर गया. फिर नेता ने अपनी सूंड मेरे पेड़ के चारों ओर लपेटी और उसे इतनी ज़ोर से हिलाया कि मैं उसके पैरों पर सिर के बल गिर पड़ा. मुझे डर था कि वह मुझे कुचलकर मार डालेगा!

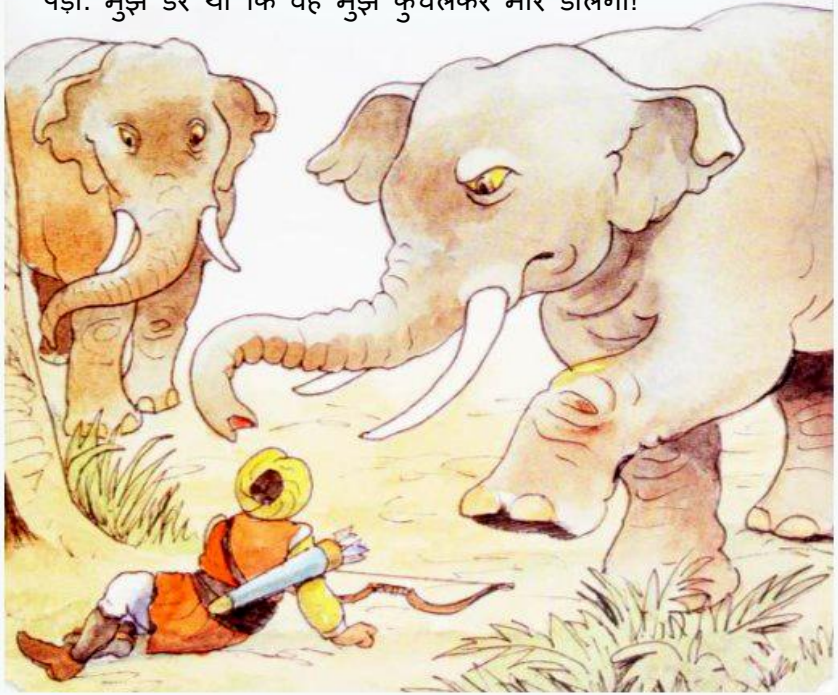

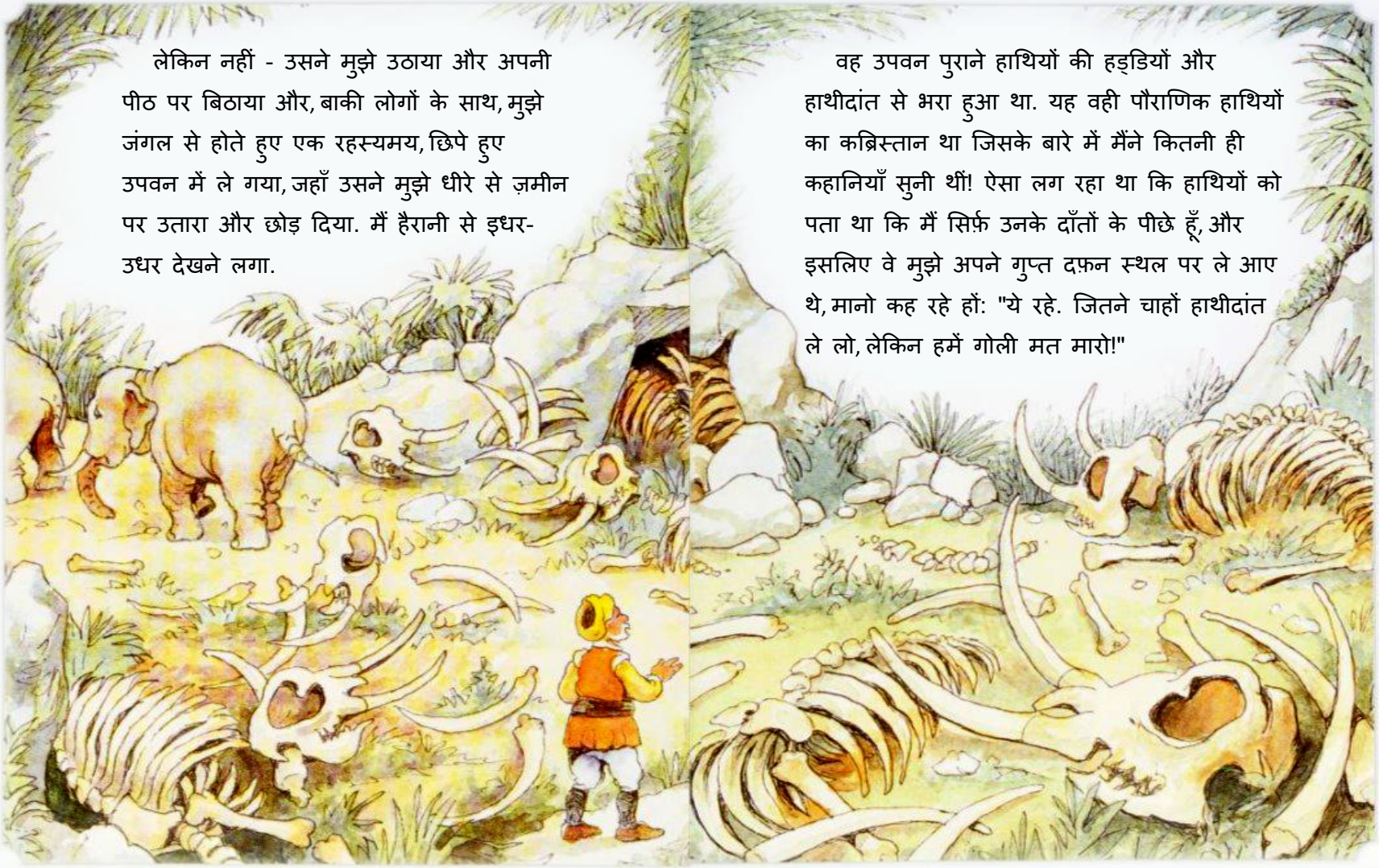

लेकिन नहीं - उसने मुझे उठाया और अपनी पीठ पर बिठाया और, बाकी लोगों के साथ, मुझे जंगल से होते हुए एक रहस्यमय, छिपे हुए उपवन में ले गया, जहाँ उसने मुझे धीरे से ज़मीन पर उतारा और छोड़ दिया. मैं हैरानी से इधर-उधर देखने लगा.

वह उपवन पुराने हाथियों की हड्डियों और हाथीदांत से भरा हुआ था. यह वही पौराणिक हाथियों का कब्रिस्तान था जिसके बारे में मैंने कितनी ही कहानियाँ सुनी थीं! ऐसा लग रहा था कि हाथियों को पता था कि मैं सिर्फ़ उनके दाँतों के पीछे हूँ, और इसलिए वे मुझे अपने गुप्त दफ़न स्थल पर ले आए थे, मानो कह रहे हों: "ये रहे. जितने चाहों हाथीदांत ले लो, लेकिन हमें गोली मत मारो!"

मेरे मालिक बहुत खुश हुए कि मैंने उनके लिए इतना बड़ा ख़ज़ाना ढूँढ़ निकाला था. हम एक पालतू हाथी पर सवार होकर बाग़ में लौटे, और दाँतों से भरी दो बड़ी टोकरियाँ भरीं. हाथियों के कब्रिस्तान की कई और यात्राओं के बाद, मेरे मालिक का भंडार हाथी दाँत से भर गया था.

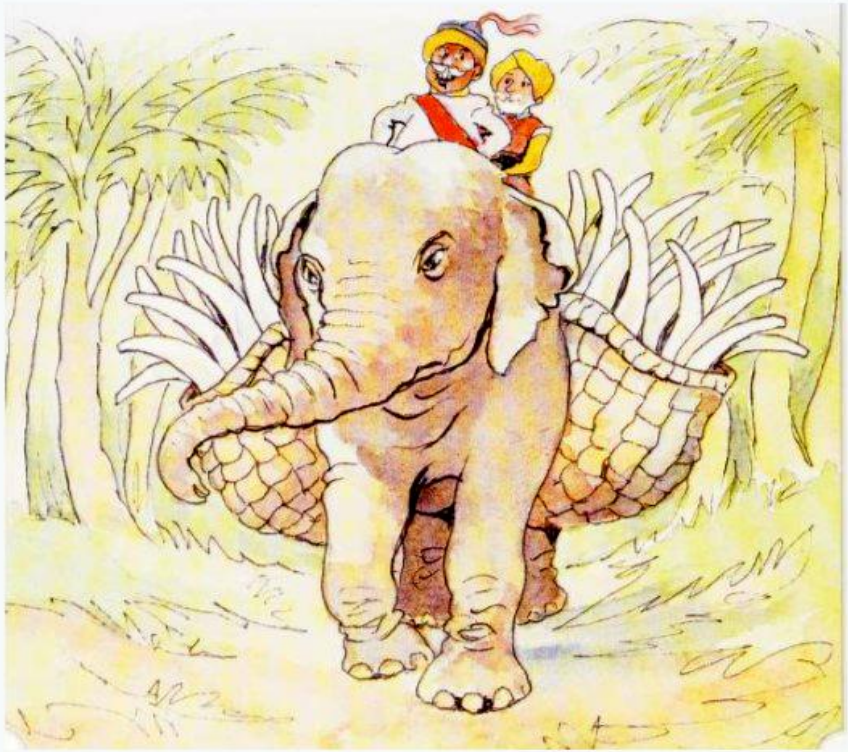

इनाम के तौर पर, उसने मुझे न सिर्फ़ आज़ादी दी, बल्कि अपने हाथीदांत का आधा भंडार भी दे दिया, जिसकी कीमत मुझे पता थी कि बहुत ज़्यादा थी!

सिंदबाद ने कहा, "जब हम घर लौट रहे थे, तो मुझे अपनी यात्राओं के दौरान आए सभी ख़तरों की याद आई - समुद्री राक्षस, चट्टानें और विशालकाय साँप - और साथ ही बंदरों और हाथियों द्वारा मुझ से किया बेहतरीन सलूक. इसलिए मैंने अपने दयालु दास-स्वामी की तरह उदार बनने और अपनी दौलत ज़रूरतमंदों के साथ बाँटने का संकल्प लिया.

पूरे दल ने सिंदबाद को उसकी कहानियाँ इतनी अच्छी तरह सुनाने के लिए धन्यवाद दिया, ख़ासकर गरीब हिंदबाद को. "महाशय," उसने कहा, "आपके ख़तरनाक कारनामों की कहानियों ने पूरी तरह साबित कर दिया है कि आप उन सभी सुख-सुविधाओं के हक़दार हैं जिनका आप अब आनंद ले रहे हैं. सिंदबाद नाविक, ईश्वर करे आप लंबी और खुशहाल ज़िंदगी जिएँ!"

समाप्त